बिमारियों का इलाज

بیماریوں کا علاج

قرآن و سُنّت سے

कुरान और सुन्नत से

تالیف

محترمہ عابدہ نسیم رحمہا اللہ

श्रीमती आबिदा नसीम

تہذیب و نظرثانی

فضیلۃ الشیخ مولانا محمد منیر قمر حفظہ اللہ

अबू अदनान शेख

मोहम्मद मुनीर कमर



مکتبہ کتاب و سنت

बीमारियों का इलाज क़ुरआन व सुन्नत से

लेखिका (तालीफ़): **मोहतरमा आबिदा नसीम** ◌ؒ

संशोधक (तहज़ीब व नज़रे-सानी): **फ़ज़ीलतुश-शेख़ मौलाना मुहम्मद मुनीर क़मर**

द्वारा अनुवादित:
मोहम्मद नसीम

24/11/1447 एएच

प्रकाशक: मकतबा किताब व सुन्नत

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيم

बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम

تقديم

तक़दीम

إِنَّ الْحَمْدَ لِلَّهِ، نَحْمَدُهُ، وَنَسْتَعِينُهُ، وَنَسْتَغْفِرُهُ، وَنَعُوذُ بِاللَّهِ مِنْ شُرُورِ أَنْفُسِنَا، وَمِنْ سَيِّئَاتِ أَعْمَالِنَا، مَنْ يَهْدِهِ اللَّهُ فَلَا مُضِلَّ لَهُ، وَمَنْ يُضْلِلْ فَلَا هَادِيَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ.

(इन्नल हम्द लिल्लाह, नह्मदुहू, व नस्तईनुहू, व नस्तग़फ़िरुहू, व नऊज़ु बिल्लाहि मिन शुरूरी अन्फ़ुसिना, व मिन सय्यिआति अअ्मालिना, मंय-यहदिहिल्लाहु फ़ला मुज़िल्ल लहू, व मंय-युज़्लिल फ़ला हादिय लहू, व अश्हदु अल्ला इलाह इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरीक लहू, व अश्हदु अन्ना मुहम्मदन् अब्दुहू व रसूलुहू।)

अम्मा बाद:

क़ारिईन-ए-किराम! अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाही व बरकातुहू
ज़ेर-ए-नज़र किताबचे में मुख़्तलिफ़ बीमारियों से शिफ़ा के लिए क़ुरआन-ए-करीम की आयात और नबी अकरम ﷺ की दुआएँ ज़िक्र की गई हैं, यह "दर क़ामत केहतर दर क़ीमत बेहतर" के मिस्दाक़ है, क्योंकि यह मुख़्तसर और मुफ़ीद है, हुसूल-ए-सकीनत व शिफ़ा की नियत से सारी क़ुरआनी आयात पढ़ें और मुख़्तलिफ़ अमराज़ के लिए नबी अकरम ﷺ की बताई हुई अलग-अलग दुआएँ भी करें, हर तरीक़े में ख़ैर व बरकत है।

अल्लाह तआला मौलिफ़ा (रहिमहल्लाह) की इस मेहनत को शरफ़-ए-क़बूल से नवाज़े और उनके शौहर जनाब इंजीनियर मुहम्मद नसीम (हिफज़ुल्लाह) को जज़ा-ए-ख़ैर अता फ़रमाए। आमीन

यह किताबचा इस से क़ब्ल भी शाए हो चुका है और अब हम इसे बाज़ ज़रूरी तसहीहात और इज़ाफ़ों के साथ मकतबा किताब व सुन्नत व उमुल क़ुरा पब्लिकेशन्स पाकिस्तान और तौहीद पब्लिकेशन्स इंडिया की तरफ़ से शाए कर रहे हैं। وَبِيدِ اللهِ التَّوْفِيقُ وَمِنْهُ الْقَبُولُ *(व बियदिल्लाहित-तौफ़ीक़ु व मिन्हुल-क़बूल।)*

इस किताब की कम्पोज़िंग हमारे लख़्त-ए-जिगर हस्सान क़मर (सल्लमहू अल्लाह) ने की है।

تَقَبَّلَ اللَّهُ مِنَّا وَمِنْهُ صَالِحَ الْأَعْمَالِ وَوَفَّقَنَا وَ إِيَّاهُ لِكُلِّ خَيْرٍ

(तक़ब्बलल्लाहु मिन्ना व मिन्हु सालिहल-अअ्माल व वफ़्फ़क़ना व इय्याहु लिकुल्लि ख़ैर।)

अल्लाह तआला इसे तमाम क़ारिईन के लिए नाफ़े बनाए। आमीन।

वस्सलामू अलैकुम व रहमतुल्लाही व बरकातुहू

अबू अदनान मुहम्मद मुनीर क़मर नवाब उद्दीन

मुतरज्जिम शरई कोर्ट अल-ख़ुबर

व दाईया मुताअविन ब-मकातब अल-जालियात

(दावा सेंटर्स) अल-ख़ुबर, व अराक वद-दल्लाम

सऊदी अरब

बरोज़ बुध (बुधवार के दिन),18/6/1441 हिजरी,12/2/2020 ईस्वी

बीमारी मोमिन की आज़माइश है:

तमामा तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं और दरूद व सलाम हो ख़ातमुल अम्बिया ﷺ पर और आप ﷺ की आल व अस्हाब (रज़ियल्लाहु अन्हुम) पर।

अल्लाह की तरफ़ से मुसीबत और आज़माइश, जिसके ज़रिए से वो अपने बन्दों को आज़माता है, जैसे मर्ज़, ख़ौफ़, भूख, प्यास, माल व जान में नुक़सान वग़ैरा हैं। ऐसे वक़्त में उसने सब्र व तसल्ली को फ़र्ज़ किया है, ताकि इस पर अल्लाह उन्हें अज्र व सवाब दे और उनकी बुराइयों और गुनाहों को माफ़ फ़रमा दे।

इरशाद-ए-बारी तआला है:

﴿وَلَنَبْلُوَنَّكُمْ بِشَيْءٍ مِنَ الْخَوْفِ وَالْجُوعِ وَنَقْصٍ مِنَ الْأَمْوَالِ وَالْأَنْفُسِ وَالثَّمَرَاتِ وَبَشِّرِ الصَّابِرِينَ﴿١٥٥﴾﴾ [البقرة: 155]

(वलनब्लुवन्नकुम् बिशयइम्-मिनल ख़ौफ़ि वलजूइ व नक़्सिम्-मिनल अम्वालि वल अन्फ़ुसि वस्स मरात, व बश्शिरिस-साबिरीन।) [अल-बक़रह: 155]

"और अलबत्ता हम तुम को कुछ डर, कुछ भूख और कुछ माल, कुछ जानों और कुछ फलों के नुक़सान के साथ आज़माएँगे और सब्र करने वालों को ख़ुशख़बरी दे।"

इरशाद-ए-नबवी ﷺ है:

"जो सब्र करता है अल्लाह तआला उसे सब्र की दौलत अता फ़रमाता है। सब्र से बेहतर किसी शख़्स को कोई चीज़ नहीं अता की गई।" *(मुत्तफ़क़ अलैह)*

इरशाद-ए-रिसालत माआब ﷺ है:

"मोमिन मर्द और मोमिन औरत पर जान, माल और औलाद की मुसीबतें नाज़िल होती रहती हैं यहाँ तक कि वो जब अल्लाह की बारगाह में पेश होगा तो उस के नामा-ए-अअ्माल में कोई गुनाह नहीं होगा।" *(सुनन अत्-तिर्मिज़ी)*

नबी अकरम ﷺ ने फ़रमाया है:

"मोमिन का मामला भी अजीब है, इस की हर हालत इस के लिए फ़ायदा मन्द है। अगर ख़ुशी हासिल होती है तो वो अपने रब का शुक्र बजा लाता है जो उस के लिए बाअिस-ए-ख़ैर है और अगर उसे आज़माइश से दोचार होना पड़ता है तो वो सब्र करता है जो उस के हक़ में बाअिस-ए-ख़ैर है। और ये सिर्फ़ मोमिन के लिए ही है, किसी और के लिए नहीं।" *(सहीह मुस्लिम: 2999)*

फ़रमान-ए-नबवी ﷺ है:

"कोई मुसलमान जब किसी जिस्मानी तकलीफ़ या बीमारी, या छोटे बड़े ग़म, या अज़िय्यत व तकलीफ़ से दोचार होता है, हत्ता कि अगर उसे कोई काँटा भी चुभ जाता है तो अल्लाह तआला इस के बदले इस के गुनाह माफ़ कर देता है।" *(सहीह अल-बुख़ारी: 5640, सहीह मुस्लिम: 2572)*

फ़रमान-ए-रिसालत माआब ﷺ है:

"जब अल्लाह तआला अपने बन्दे के लिए भलाई का इरादा करता है तो उसे दुनिया में ही जल्द अज़ाब दे देता है, और जब अल्लाह तआला किसी बन्दे के साथ सख़्ती का इरादा करता है तो उस के गुनाहों का मुआख़ज़ा नहीं करता, यहाँ तक कि क़ियामत के दिन इस के गुनाहों की उसे पूरी सज़ा मिलेगी।"

(सुनन अत्-तिर्मिज़ी: 2396, सुनन इब्न माजाह: 4031, सहीह इब्न हिब्बान: 9411)

इरशाद-ए-नबवी ﷺ है:

"बड़ा बदला बड़ी मुसीबत पर ही मिलता है और अल्लाह तआला जब किसी क़ौम से मोहब्बत करता है तो उन्हें मुसीबतों में मुब्तला कर देता है। जो इस मुसीबत पर राज़ी रहे इस को अल्लाह की रज़ा हासिल होती है और जो इस मुसीबत पर नाराज़ हुआ उसे अल्लाह की नाराज़गी का सामना करना पड़ता है।"*(सुनन अत्-तिर्मिज़ी: 2396, सुनन इब्न माजाह: 4031)*

दुनिया की कमी बेशी, दुनिया का माल व अस्बाब, क़ूवत और इज़्ज़त व ज़िल्लत अल्लाह की मोहब्बत या नाराज़गी की अलामत नहीं है, बल्कि सिर्फ़ आज़माइश के लिए अल्लाह तआला ऐसा करता है, ताकि वो देखे कि नेअमतों में इस का कौन शुक्र अदा कर रहा है और तकलीफ़ों में साबिर कौन है?

दुनिया दारुल अमल है और दारुल इम्तिहान भी, जिस ने इस की हक़ीक़त को समझ लिया वही कामयाब हुआ।

नबी अकरम ﷺ का इरशाद-ए-मुबारक है:
"ऐसे वक़्त (वफ़ात) में जिस बन्दे के दिल में ये दोनों बातें (डर और उम्मीद) जमा होती हैं, अल्लाह तआला इस को वो चीज़ देता है जिस की वो उम्मीद रखता है और इस चीज़ से बे-ख़ौफ़ करता है जिस से वो डरता है।" *(सुनन अत्-तिर्मिज़ी)*

नमाज़ इबादात की असास व बुनियाद है जो दीन का स्तोन और अल्लाह तआला से राब्ते का ज़रिया है। नमाज़ हर बालिग़ आक़िल पर फ़र्ज़ है। सेहत और मर्ज़, सफ़र व हज़र और अमन व ख़ौफ़ हर हाल में इस पर अपनी इस्तताअत के मुताब्रिक़ खड़े होकर, बैठकर या लेट कर वाजिब है। किसी भी हालत में जब तक अक़्ल मौजूद है इससे नमाज़ साक़ित नहीं होगी।

अल्लाह तआला सूरह अल-हिज्र में फ़रमाता है:

﴿وَاعْبُدْ رَبَّكَ حَتَّىٰ يَأْتِيَكَ الْيَقِينُ﴾ [الحجر: 99]

(वअबुद रब्बक हत्ता यातियकल यक़ीन।) [अल-हिज्र: 99]
"और अपने रब की इबादत करते रहें यहाँ तक कि आप को मौत आ जाए।"

बीमार होने की सूरत में एक मुसलमान बन्दे का अल्लाह तआला से अच्छा गुमान होना चाहिए कि अल्लाह तआला इस पर रहम करेगा, अज़ाब नहीं देगा और मग़फ़िरत फ़रमाएगा, मुआख़ज़ा नहीं करेगा। क्योंकि वो वसीअ मग़फ़िरत वाला है। इस की रहमत हर चीज़ को शामिल है।

एक क़ुदसी हदीस में आप ﷺ ने फ़रमाया है:

'अल्लाह तआला फ़रमाता है: मैं अपने बन्दे के गुमान के मुताबिक़ हूँ, और इस के इसी गुमान के मुताबिक़ इस के साथ मुआमला करूँगा।"
(सहीह अल-बुख़ारी: 7405, सहीह मुस्लिम: 7507)

अल्लाह तआला ने जितनी बीमारियाँ नाज़िल की हैं उन का इलाज भी उतारा है। तिब्बी (Medical) इलाज के साथ-साथ रूहानी इलाज भी करना चाहिए, क्योंकि अल्लाह ने क़ुरआन में भी शिफ़ा रखी है। इरशाद-ए-बारी तआला है:

﴿وَنُنَزِّلُ مِنَ الْقُرْآنِ مَا هُوَ شِفَاءٌ وَرَحْمَةٌ لِلْمُؤْمِنِينَ وَلَا يَزِيدُ الظَّالِمِينَ إِلَّا خَسَارًا﴾ [الإسراء: 82]

(व नुनैज़िलु मिनल क़ुरआनि मा हुव शिफ़ाउंव-व रहमतुल-लिलमुअमिनीन, व ला यज़ीदुज़-ज़ालिमीना इल्ला ख़सारा।) *[बनी इस्राईल: 82]*

"और हम क़ुरआन में से जो उतारते हैं वो तन्दुरुस्ती और रहमत है मुसलमानों के लिए, और काफ़िरों को तो और ज़्यादा नुक़सान देता है।"

क़ुरआन-ए-करीम की अहमियत तो बिलाशबा इस आयत से भी मालूम होती है जिस में इरशाद-ए-बारी तआला है:

﴿لَوْ أَنْزَلْنَا هَذَا الْقُرْآنَ عَلَى جَبَلٍ لَرَأَيْتَهُ خَاشِعًا مُتَصَدِّعًا مِنْ خَشْيَةِ اللَّهِ وَتِلْكَ الْأَمْثَالُ نَضْرِبُهَا لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُونَ﴾ [الحشر: 21]"

(लौ अन्ज़ल्ना हाज़ल क़ुरआना अला जबलिल्-लराऐतहू ख़ाशिअम-मुतसद्दिअम-मिन ख़श्यतिल्लाह, व तिल्कल अम्शालु नज़रबुहा लिन्नासि लअल्लहुम यतफ़क्करून।) *[अल-हश्र: 21]*

"(ऐ पैग़म्बर!) अगर हम इस क़ुरआन को पहाड़ पर उतारते (हालाँकि पहाड़ बहुत सख़्त होता है) तो तू देखता कि वो अल्लाह के डर से झुक रहा है, फट रहा है, और हम ये मिसालें इस लिए लोगों से बयान करते हैं कि वो सोचें।"

तरीक़ा-ए-इलाज:

क़ुरआनी आयात से हर बीमारी का इलाज मुमकिन है यहाँ तक कि कैंसर का भी। लिहाज़ा हम यहाँ इन क़ुरआनी आयात का ज़िक्र कर रहे हैं जो अल्लाह ने क़ुरआन में अपने पैग़म्बरों को सिखाईं, ताकि क़ारिईन इन से मुस्तफ़ीद हो सकें।

मरीज़ के लिए मुनासिब ये है कि वो ख़ुद को अल्लाह की याद में मश्ग़ूल रखे, गुनाहों से बचे, कसरत से इस्तग़फ़ार और ज़िक्र-ए-इलाही करे। ख़ुद के लिए, अपने अहल व अयाल और तमाम मोमिन व मोमिनात और मुस्लिम व मुस्लिमात के लिए दुआएँ करे।

सब से पहले सूरह फ़ातिहा तीन बार, फिर अव्वल व आख़िर दरूद शरीफ़ (दरूद-ए-इब्राहीमी) इस के बाद दर्ज ज़ैल आयात एक एक दो दो तीन तीन बार पढ़ें:

1. اللّهُمّ صَلِّ عَلَى مُحَمّدٍ وَعَلَى آلِ مُحَمّدٍ كَمَا صَلّيْتَ عَلَى إِبْرَاهِيمَ وَعَلَى آلِ إِبْرَاهِيمَ إِنّكَ حَمِيدٌ مَجِيدٌ۝اللّهُمّ بَارِكْ عَلَى مُحَمّدٍ وَعَلَى آلِ مُحَمّدٍ كَمَا بَارَكْتَ عَلَى إِبْرَاهِيمَ وَعَلَى آلِ إِبْرَاهِيمَ إِنّكَ حَمِيدٌ مَجِيدٌ ۝

अल्लाहुम्मा सल्लि अला मुहम्मदिंव-व अला आलि मुहम्मदिन कमा सल्लैता अला इब्राहीमा व अला आलि इब्राहीमा इन्नका हमीदुम-मजीद। अल्लाहुम्मा बारिक अला मुहम्मदिंव-व अला आलि मुहम्मदिन कमा बारकता अला इब्राहीमा व अला आलि इब्राहीमा इन्नका हमीदुम-मजीद।

2. أَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ.

﴿بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۝١ الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۝٢ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۝٣ مَالِكِ يَوْمِ الدِّينِ ۝٤ إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِينُ ۝٥ اهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيمَ ۝٦ صِرَاطَ الَّذِينَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ غَيْرِ الْمَغْضُوبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّالِّينَ ۝٧﴾ [الفاتحة: 1-7]

अऊज़ु बिल्लाहि मिनश-शैतानिर-रजीम।

बिस्मिल्लाहिर-रहमानिर-रहीम। अल-हम्दु लिल्लाही रब्बिल-आलमीन। अर-रहमानिर-रहीम। मालिकि यौमिद-दीन। इय्याका नाबुदु व इय्याका नस्तईन। इह्दिनस-सिरातल-मुस्तक़ीम। सिरातल-लज़ीना अनअम्ता अलैहिम, ग़ैरिल-मग़ज़ूबि अलैहिम वलज़्-ज़ॉल्लीन।

3. بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ.

﴿الم ۝١ ذَلِكَ الْكِتَابُ لَا رَيْبَ فِيهِ هُدًى لِلْمُتَّقِينَ ۝٢ الَّذِينَ يُؤْمِنُونَ
بِالْغَيْبِ وَيُقِيمُونَ الصَّلَاةَ وَمِمَّا رَزَقْنَاهُمْ يُنْفِقُونَ ۝٣ وَالَّذِينَ يُؤْمِنُونَ
بِمَا أُنْزِلَ إِلَيْكَ وَمَا أُنْزِلَ مِنْ قَبْلِكَ وَبِالْآخِرَةِ هُمْ يُوقِنُونَ ۝٤ أُولَئِكَ عَلَى
هُدًى مِنْ رَبِّهِمْ وَأُولَئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ۝٥﴾ [البقرة: 1-5]

बिस्मिल्लाहिर-रहमानिर-रहीम।

अलिफ़-लाम-मीम। ज़ालिकल-किताबु ला रैबा फ़ीह, हुदल-लिलमुत्तक़ीन। अल-लज़ीना युअ्मिनूना बिल-ग़ैबि व युक़ीमूनस-सलाता व मिम्मा रज़क़्नाहुम युन्फ़िक़ून। वल-लज़ीना युअ्मिनूना बिमा उन्ज़िला इलैका व मा उन्ज़िला मिन् क़ब्लिक, व बिल-आख़िरति हुम यूक़िनून। उलाइका अला हुदम-मिर-रब्बिहिम व उलाइका हुमुल-मुफ़्लिहून।

4. ﴿اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّومُ لَا تَأْخُذُهُ سِنَةٌ وَلَا نَوْمٌ لَهُ مَا فِي
السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ مَنْ ذَا الَّذِي يَشْفَعُ عِنْدَهُ إِلَّا بِإِذْنِهِ
يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَلَا يُحِيطُونَ بِشَيْءٍ مِنْ عِلْمِهِ إِلَّا
بِمَا شَاءَ وَسِعَ كُرْسِيُّهُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ وَلَا يَئُودُهُ حِفْظُهُمَا
وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيمُ ۝٢٥٥﴾ [البقرة: 255]

अल्लाहु ला इलाह इल्ला हुवल-हय्युल-क़य्यूम, ला तअ्ख़ुज़ुहू सिनतुंव-व ला नौम, लहू मा फ़िस-समावाति व मा फ़िल-अर्ज़, मन ज़ल-लज़ी यशफ़उ

इन्दहू इल्ला बिइज़निह, यअ़्लमु मा बैना ऐदीहिम व मा ख़ल्फ़हुम, व ला युहीतूना बिशयइम-मिन इल्मिही इल्ला बिमा शाअ, वसिअ कुरसिय्युहुस-समावाति वल-अर्ज़, व ला यऊदुहू हिफ़्ज़ुहुमा, व हुवल-अलिय्युल-अज़ीम।

5. ﴿آمَنَ الرَّسُولُ بِمَا أُنْزِلَ إِلَيْهِ مِنْ رَبِّهِ وَالْمُؤْمِنُونَ كُلٌّ آمَنَ بِاللَّهِ وَمَلَائِكَتِهِ وَكُتُبِهِ وَرُسُلِهِ لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ أَحَدٍ مِنْ رُسُلِهِ وَقَالُوا سَمِعْنَا وَأَطَعْنَا غُفْرَانَكَ رَبَّنَا وَإِلَيْكَ الْمَصِيرُ۝٢٨٥ لَا يُكَلِّفُ اللَّهُ نَفْسًا إِلَّا وُسْعَهَا لَهَا مَا كَسَبَتْ وَعَلَيْهَا مَا اكْتَسَبَتْ رَبَّنَا لَا تُؤَاخِذْنَا إِنْ نَسِينَا أَوْ أَخْطَأْنَا رَبَّنَا وَلَا تَحْمِلْ عَلَيْنَا إِصْرًا كَمَا حَمَلْتَهُ عَلَى الَّذِينَ مِنْ قَبْلِنَا رَبَّنَا وَلَا تُحَمِّلْنَا مَا لَا طَاقَةَ لَنَا بِهِ وَاعْفُ عَنَّا وَاغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا أَنْتَ مَوْلَانَا فَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ۝٢٨٦﴾ [البقرة: 285-286]

आमनर-रसूलो बिमा उन्ज़िला इलैहि मिर-रब्बिही वल-मुअ्मिनून, कुल्लुन आमना बिल्लाहि व मलाइगतिही व कुतुबिही व रुसुलिह, ला नुफ़र्रिकु बैना अहदिम-मिर-रुसुलिह, व क़ालू समिअ्ना व अतअ्ना ग़ुफ़्रानका रब्बना व इलैगल-मसीर। ला युकल्लिफ़ुल्लाहु नफ़्सन इल्ला वुसअहा, लहा मा कसबत् व अलैहा मक्तसबत्, रब्बना ला तुआख़िज़्ना इन-नसीना औ अख्तअ्ना, रब्बना व ला तहमिल् अलैना इस्रन कमा हमल्तहू अलल्लज़ीना मिन् क़ब्लिना, रब्बना व ला तुहम्मिल्ना मा ला ताक़ता लना बिह, वअ्फ़ु

अन्ना, वग़्फ़िर लना, वर्हम्ना, अन्ता मौलाना फ़न्सूर्ना अलल-क़ौमिल-काफ़िरीन।

6. ﴿قُلِ اللَّهُمَّ مَالِكَ الْمُلْكِ تُؤْتِي الْمُلْكَ مَنْ تَشَاءُ وَتَنْزِعُ الْمُلْكَ مِمَّنْ تَشَاءُ وَتُعِزُّ مَنْ تَشَاءُ وَتُذِلُّ مَنْ تَشَاءُ بِيَدِكَ الْخَيْرُ إِنَّكَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٢٦﴾ تُولِجُ اللَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَتُولِجُ النَّهَارَ فِي اللَّيْلِ وَتُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَتُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَتَرْزُقُ مَنْ تَشَاءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿٢٧﴾﴾ [آل عمران: 26-27]

क़ुलिल्लाहुम्मा मालिकल-मुल्कि तुअ्तिल-मुल्का मन तशाउ व तन्ज़िउल-मुल्का मिम्मन तशाउ व तुइज्ज़ु मन तशाउ व तुज़िल्लु मन तशाउ, बियदिकल-ख़ैर, इन्नका अला कुल्लि शैइन क़दीर। तूलिजुल-लैला फ़िन-नहारि व तूलिजुन-नहारा फ़िल-लैल, व तुख़रिजुल-हय्या मिनल-मय्यिति व तुख़रिजुल-मय्यिता मिनल-हय्यि, व तर्ज़ुक़ु मन तशाउ बग़ैरि हिसाब।

7. ﴿ حَسْبُنَا اللَّهُ وَنِعْمَ الْوَكِيلُ ﴿١٧٣﴾﴾ [آل عمران: 173]

हस्बुनल्लाहु व निअ्मल-वकील।

8. ﴿رَبَّنَا إِنَّنَا سَمِعْنَا مُنَادِيًا يُنَادِي لِلْإِيمَانِ أَنْ آمِنُوا بِرَبِّكُمْ فَآمَنَّا رَبَّنَا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوبَنَا وَكَفِّرْ عَنَّا سَيِّئَاتِنَا وَتَوَفَّنَا مَعَ الْأَبْرَارِ ﴿١٩٣﴾ رَبَّنَا

وَآتِنَا مَا وَعَدْتَنَا عَلَى رُسُلِكَ وَلَا تُخْزِنَا يَوْمَ الْقِيَامَةِ إِنَّكَ لَا تُخْلِفُ الْمِيعَادَ﴿١٩٤﴾ [آل عمران: 193-194]

रब्बना इन्नना समिअ्ना मुनादियंय-युनादी लिल-ईमानि अन आमिनू बिरब्बिकुम फ़आमन्ना, रब्बना फ़ग्फ़िर लना ज़ुनूबना व कफ़्फ़िर अन्ना सय्यिआतिना व तवफ़्फ़ना मअल-अबरार। रब्बना व आतिना मा वअ़त्तना अला रुसुलिका व ला तुख़्ज़िना यौमल-क़ियामह, इन्नका ला तुख़्लीफुल-मीआद।

अगर कोई शख्स (رَبَّنَا فَاغْفِرْ لَنَا...) *(रब्बना फ़ग्फ़िर लना...)* से दुआ शुरू करता है, तो इसमें कोई हर्ज़ नहीं है

9. ﴿قَالَا رَبَّنَا ظَلَمْنَا أَنْفُسَنَا وَإِنْ لَمْ تَغْفِرْ لَنَا وَتَرْحَمْنَا لَنَكُونَنَّ مِنَ الْخَاسِرِينَ﴿٢٣﴾﴾ [الأعراف: 23]

क़ाला रब्बना ज़लम्ना अन्फुसना व इल्लम् तग्फ़िर लना व तर्हम्ना लनकूनन्ना मिनल-ख़ासिरीन।

10. ﴿ فَاطِرَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ أَنْتَ وَلِيِّي فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ تَوَفَّنِي مُسْلِمًا وَأَلْحِقْنِي بِالصَّالِحِينَ﴿١٠١﴾﴾ [يوسف: 101]

फ़ातिरस-समावाति वल-अर्ज़ि अन्ता वलिय्यी फ़िद-दुनिया वल-आख़िरह, तवफ़्फ़नी मुस्लिमांव-व अल्हिक़्नी बिस-सालिहीन।

अगर दुआ करने वाला यूँ कह ले: "(رَبِّ فَاطِرَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ) *(रब्बि फ़ातिरस-समावाति वल-अर्ज़)* तो ज़्यादा बेहतर होगा।

11. ﴿وَنُنَزِّلُ مِنَ الْقُرْآنِ مَا هُوَ شِفَاءٌ وَرَحْمَةٌ لِلْمُؤْمِنِينَ ﴿٨٢﴾﴾ [الإسراء: 82]

व नुनैज़िलु मिनल क़ुरआनि मा हुव शिफ़ाउंव-व रहमतुल-लिलमुअमिनीन।

12. ﴿قُلْنَا يَا نَارُ كُونِي بَرْدًا وَسَلَامًا عَلَى إِبْرَاهِيمَ﴿٦٩﴾﴾ [الأنبياء: 69]

क़ुल्ना या नारु कूनी बरदंव-व सलामन अला इब्राहीम।

13. ﴿وَأَيُّوبَ إِذْ نَادَى رَبَّهُ أَنِّي مَسَّنِيَ الضُّرُّ وَأَنْتَ أَرْحَمُ الرَّاحِمِينَ﴿٨٣﴾﴾ [الأنبياء: 83]

व अय्यूबा इज़ नादा रब्बहू अन्नी मस्सनियज़-ज़ुर्रु व अन्ता अर्मुर-राहिमीन।

अगर कोई शख़्स शुरू के अल्फ़ाज़ यूँ: (رَبِّ أَنِّي مَسَّنِيَ...) (रब्बि अन्नी मस्सनियज़-ज़ुर्रु व अन्ता अर्मुर-राहिमीन।) कर ले तो भी दुआ ठीक है।

.

14. ﴿ لَا إِلَٰهَ إِلَّا أَنْتَ سُبْحَانَكَ إِنِّي كُنْتُ مِنَ الظَّالِمِينَ۝٨٧ فَاسْتَجَبْنَا لَهُ وَنَجَّيْنَاهُ مِنَ الْغَمِّ ۚ وَكَذَٰلِكَ نُنْجِي الْمُؤْمِنِينَ۝٨٨﴾ [الأنبياء: 87-88]

ला इलाह इल्ला अन्ता सुब्हानका इन्नी कुन्तु मिनज़-ज़ालिमीन। फ़स्तजब्ना लहू व नज्वैनाहु मिनल-ग़म्म, व कज़ालिका नुन्जिल-मुअ्मिनीन।

15. ﴿ هُوَ مَوْلَاكُمْ ۖ فَنِعْمَ الْمَوْلَىٰ وَنِعْمَ النَّصِيرُ۝٧٨﴾ [الحج: 78]

हुव मौलाकुम, फ़निअ्मल-मौला व निअ्मन्-नसीर।

16. ﴿ فَتَبَارَكَ اللَّهُ أَحْسَنُ الْخَالِقِينَ۝١٤﴾ [المؤمنون: 14]

फ़तबार कल्लाहु अहसनुल-ख़ालिक़ीन।

17. ﴿أَفَحَسِبْتُمْ أَنَّمَا خَلَقْنَاكُمْ عَبَثًا وَأَنَّكُمْ إِلَيْنَا لَا تُرْجَعُونَ۝١١٥ فَتَعَالَى اللَّهُ الْمَلِكُ الْحَقُّ ۖ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْكَرِيمِ۝١١٦ وَمَنْ يَدْعُ مَعَ اللَّهِ إِلَٰهًا آخَرَ لَا بُرْهَانَ لَهُ بِهِ فَإِنَّمَا حِسَابُهُ عِنْدَ رَبِّهِ ۚ إِنَّهُ لَا يُفْلِحُ الْكَافِرُونَ۝١١٧ وَقُلْ رَبِّ اغْفِرْ وَارْحَمْ وَأَنْتَ خَيْرُ الرَّاحِمِينَ۝١١٨﴾ [المؤمنون: 115-118]

अफ़हसिब्तुम् अन्नमा ख़लक्नाकुम् अबसौंव-व अन्नकुम् इलैना ला तुर्जऊन। फ़तआलल्लाहुल-मलिकुल-हक़्क़ु, ला इलाह इल्ला हुव रब्बुल-अर्शिल-कनीम। व मंय-यद्उ मअल्लाहि इलाहन आख़र ला बुरहाना लहू बिही फ़इन्नमा हिसाबुहू इन्द रब्बिही, इन्नहू ला युफ़्लिहुल-काफ़िरून। व क़ुर-रब्बिग़्फ़िर वर्हम् व अन्ता ख़ैरुर-राहिमीन।

18. ﴿وَإِذَا مَرِضْتُ فَهُوَ يَشْفِينِ ۝٨٠﴾ [الشعراء: 80]

व इज़ा मरिज़्तु फ़हुव यश्फ़ीन।

19. ﴿وَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ وَكَفَى بِاللَّهِ وَكِيلًا ۝٣﴾ [الأحزاب: 3]

व तवक्कल अलल्लाहि व कफ़ा बिल्लाहि वकीला।

20. ﴿أَنِّي مَغْلُوبٌ فَانْتَصِرْ ۝١٠﴾ [القمر: 10]

अन्नी मग़्लूबुन फ़न्तसिर।

अगर कोई शख़्स पहला लफ़्ज़ यूँ कहे: (رَبِّ إِنِّي...) (रब्बि इन्नी...) तो भी दुआ सहीह है।

21. ﴿هُوَ اللَّهُ الَّذِي لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ عَالِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ هُوَ الرَّحْمَنُ الرَّحِيمُ ۝٢٢ هُوَ اللَّهُ الَّذِي لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الْمَلِكُ الْقُدُّوسُ السَّلَامُ الْمُؤْمِنُ الْمُهَيْمِنُ الْعَزِيزُ الْجَبَّارُ الْمُتَكَبِّرُ سُبْحَانَ اللَّهِ عَمَّا يُشْرِكُونَ ۝٢٣ هُوَ اللَّهُ الْخَالِقُ الْبَارِئُ الْمُصَوِّرُ لَهُ الْأَسْمَاءُ الْحُسْنَى

يُسَبِّحُ لَهُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ﴿٢٤﴾ [الحشر: 22-24]

हुवल्लाहुल्लज़ी ला इलाह इल्ला हुव, आलिमुल-ग़ैबि वश्शहादति, हुवर-रहमानुर-रहीम। हुवल्लाहुल्लज़ी ला इलाह इल्ला हुवल-मलिकुल-क़ुद्दूसुस्-सलामुल-मुअ्मिनुल-मुहैमिनुल-अज़ीज़ुल-जब्बारुल-मुतकब्बिर, सुब्हानल्लाही अम्मा युशरिकून। हुवल्लाहुल-ख़ालिक़ुल-बारिउल-मुसव्विरु लहुल-अस्माउल-हुस्ना, युसब्बिहु लहू मा फ़िस-समावाति वल-अर्ज़, व हुवल-अज़ीज़ुल-हकीम।

22. ﴿قَاتِلُوهُمْ يُعَذِّبْهُمُ اللَّهُ بِأَيْدِيكُمْ وَيُخْزِهِمْ وَيَنْصُرْكُمْ عَلَيْهِمْ وَيَشْفِ صُدُورَ قَوْمٍ مُؤْمِنِينَ﴿١٤﴾﴾ [التوبة: 14]

क़ातितलूहुम युअज्ज़िबहुमुल्लाहु बिऐदीकुम व युख़्ज़िहिम व यन्सुरकुम अलैहिम व यश्फ़ि सुदूरा क़ौमिम-मुअ्मिनीन।

23. ﴿يَا أَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَاءَتْكُمْ مَوْعِظَةٌ مِنْ رَبِّكُمْ وَشِفَاءٌ لِمَا فِي الصُّدُورِ وَهُدًى وَرَحْمَةٌ لِلْمُؤْمِنِينَ﴿٥٧﴾﴾ [يونس: 57]

या अय्युहन-नासु क़द जाअत्कुम् मौइज़तुम्-मिर-रब्बिकुम् व शिफ़ाउल-लिमा फ़िस-सुदूरि व हुदंव-व रहमतुल-लिलमुअ्मिनीन।

24. ﴿ يَخْرُجُ مِنْ بُطُونِهَا شَرَابٌ مُخْتَلِفٌ أَلْوَانُهُ فِيهِ شِفَاءٌ لِلنَّاسِ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً لِقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ ﴿٦٩﴾ ﴾ [النحل: 69]

यख़्रुजु मिम-बुतूनिहा शराबुम-मुख़्तलिफ़ुन अल्वानुहू फ़ीहि शिफ़ाउल-लिन्नास, इन्ना फ़ी ज़ालिका लआयतल्-लिक़ौमिंय-यतफ़क्क़रून।

25. ﴿وَلَوْ جَعَلْنَاهُ قُرْآنًا أَعْجَمِيًّا لَقَالُوا لَوْلَا فُصِّلَتْ آيَاتُهُ ۖ أَأَعْجَمِيٌّ وَعَرَبِيٌّ ۗ قُلْ هُوَ لِلَّذِينَ آمَنُوا هُدًى وَشِفَاءٌ ﴿٤٤﴾ ﴾ [فصلت: 44]

व लौ जअल्नाहु क़ुरआनन् अअ्जमिय्यल-लक़ालू लौला फ़ुस्सिलत आयातुह, अअ्जमिय्युंव-व अरबिय्य, क़ुल हुव लिल्लज़ीना आमनू हुदंव-व शिफ़ा।

26. بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ﴿قُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ ﴿١﴾ اللَّهُ الصَّمَدُ ﴿٢﴾ لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُولَدْ ﴿٣﴾ وَلَمْ يَكُنْ لَهُ كُفُوًا أَحَدٌ ﴿٤﴾ ﴾ [الإخلاص: 1-4]

बिस्मिल्लाहिर-रहमानिर-रहीम। क़ुल हुवल्लाहु अहद। अल्लाहुस्-समद। लम यलिद वलम यूलद। वलम यकुल्-लहू कुफ़ुवन अहद।

27. بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ ﴿قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ ﴿١﴾ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ ﴿٢﴾ وَمِنْ شَرِّ غَاسِقٍ إِذَا وَقَبَ ﴿٣﴾ وَمِنْ شَرِّ النَّفَّاثَاتِ فِي الْعُقَدِ ﴿٤﴾ وَمِنْ شَرِّ حَاسِدٍ إِذَا حَسَدَ ﴿٥﴾ ﴾ [الفلق: 1-5]

बिस्मिल्लाहिर-रहमानिर-रहीम। कुल अऊज़ु बिरब्बिल-फ़लक़। मिन शर्रि मा ख़लक़। व मिन शर्रि ग़ासिक़िन इज़ा वक़ब। व मिन शर्रिन-नफ़्फ़ासाति फ़िल-उक़द। व मिन शर्रि हासिदिन इज़ा हसद।

28. بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ ﴿قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ النَّاسِ۝١ مَلِكِ النَّاسِ۝٢ إِلَٰهِ النَّاسِ۝٣ مِنْ شَرِّ الْوَسْوَاسِ الْخَنَّاسِ۝٤ الَّذِي يُوَسْوِسُ فِي صُدُورِ النَّاسِ۝٥ مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ۝٦﴾ [الناس: 1-6]

बिस्मिल्लाहिर-रहमानिर-रहीम। कुल अऊज़ु बिरब्बिल-फ़लक़। मिन शर्रि मा ख़लक़। व मिन शर्रि ग़ासिक़िन इज़ा वक़ब। व मिन शर्रिन-नफ़्फ़ासाति फ़िल-उक़द। व मिन शर्रि हासिदिन इज़ा हसद।

क़ुरआन-ए-करीम की ये आयात और सूरतें बाअिस-ए-शिफ़ा हैं। दरअस्ल क़ुरआन-ए-करीम पूरा ही शिफ़ा है। क़ुरआन-ए-करीम के अलावा नबी अकरम ﷺ ने भी इस सिलसिले में बहुत सारी दुआएँ सिखलाई हैं जिन की तफ़्सीलात तो बड़ी कुतुब में देखी जा सकती हैं। यहाँ हम इन में से सिर्फ़ चन्द दुआएँ दर्ज कर रहे हैं:

.29

((لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ))

ला हौला व ला क़ुव्वता इल्ला बिल्लाह।

(सहीह अल-बुख़ारी: 7484, सहीह मुस्लिम: 2704)

.30

((اللَّهُمَّ رَبَّ النَّاسِ◉ أَذْهِبِ الْبَأْسَ وَاشْفِ أَنْتَ الشَّافِي لَا شِفَاءَ
إِلَّا شِفَاؤُكَ شِفَاءً لَا يُغَادِرُ سَقَمًا))

अल्लाहुम्मा रब्बन-नासि, अज़हिबिल-बअ्सा वश्फ़ि अन्तश्-शाफ़ी ला शिफ़ाअ इल्ला शिफ़ाउका शिफ़ाअल-ला युग़ादिरु सक़मा।

मरीज़ के पास 7 मर्तबा यह दुआ करें तो अल्लाह तआला उसे इस बीमारी से शिफ़ा देगा:

31. ((أَسْأَلُ اللَّهَ الْعَظِيمَ رَبَّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ أَنْ يَشْفِيَكَ))

असअलुल्लाहल-अज़ीमा रब्बल-अर्शिल-अज़ीमी अंय-यशिफ़यका।

(सूनन अबू दाऊद, सुनन अत्-तिर्मिज़ी, मुसनद अहमद, सहीह अल-जामिअ: 5766)

यह दुआ भी मरीज़ के पास करनी चाहिए:

32. ((لَا بَأْسَ طَهُورٌ إِنْ شَاءَ اللَّهُ))

ला बअ्सा तहूरुन इन शाअल्लाह।

(सहीह अल-बुख़ारी: 3616)

)

सुबह व शाम नमाज़-ए-फ़ज्र व मग्रिब के बाद 3 मर्तबा यह दुआ करें तो तमाम बीमारियों और ज़रर रसाँ ज़हरीले कीड़ों मकोड़ों से महफ़ूज़ रहेंगे:

33. بِسْمِ اللَّهِ الَّذِى لَا يَضُرُّ مَعَ اسْمِهِ شَىْءٌ فِى الْأَرْضِ وَلَا فِى السَّمَاءِ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ

बिस्मिल्लाहिल्-लज़ी ला यजुरु मअस्-मिही शैउन फ़िल-अर्ज़ि व ला फ़िस-समाइ, व हुवस्-समीउल-अलीम।

(सुनन अबू दाऊद: 5088, सुनन अत्-तिर्मिज़ी: 3388)

34. يَا حَىُّ يَا قَيُّومُ بِرَحْمَتِكَ أَسْتَغِيثُ

या हय्यु या क़य्यूमु बिरहमतिका अस्तग़ीस।

(सुनन अन-नसाई: 6/147, मुस्तदरक अल-हाकिम: 1/730)

35. أُعِيذُكُمَا بِكَلِمَاتِ اللَّهِ التَّامَّةِ مِنْ كُلِّ شَيْطَانٍ وَهَامَّةٍ وَمِنْ كُلِّ عَيْنٍ لَامَّةٍ

उईज़ुकुमा बिकलिमातिल्लाहित-ताम्मति मिन् कुल्लि शैतानिंव-व हाम्मतिंव-व मिन् कुल्लि ऐनिल्-लाम्मः।
(सहीह अल-बुख़ारी: 3371)

अपने ख़ुद के लिए"أَعُوذُ بِكَلِمَاتِ..." (अऊज़ु बिकलिमाति...) दूसरे एक के लिये "أُعِيذُكَ بِكَلِمَاتِ..." (उईज़ुका बिकलिमाति...) भी कहा जा सकता है।

36. ((اكْشِفِ الْبَأْسَ رَبَّ النَّاسِ إِلَهَ النَّاسِ)) (متفق عليه)

अक्शिफ़िल-बअ्सा रब्बन-नासि इलाहन-नास।

37. بِسْمِ اللَّهِ أَرْقِيكَ◉ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ يُؤْذِيكَ◉ مِنْ شَرِّ كُلِّ نَفْسٍ أَوْ عَيْنِ حَاسِدٍ◉ اللَّهُ يَشْفِيكَ◉ بِسْمِ اللَّهِ أَرْقِيكَ

बिस्मिल्लाहि अर्क़ीक, मिन् कुल्लि शैइंय-युअ्ज़ीक, मिन् शर्रि कुल्लि नफ़्सिन औ ऐनि हासिदिन, अल्लाहु यश्फ़ीक, बिस्मिल्लाहि अर्क़ीक। (सहीह मुस्लिम: 2186)

38. اللَّهُمَّ لَا سَهْلَ إِلَّا مَا جَعَلْتَهُ سَهْلًا وَأَنْتَ تَجْعَلُ الْحَزْنَ إِذَا شِئْتَ سَهْلًا

अल्लाहुम्मा ला सहला इल्ला मा जअल्तहू सहलंव-व अन्ता तजअलुल-हज़्ना इज़ा शिअ्ता सहला। (सहीह इब्न हिब्बान: 2427)

रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: "जब तुम में से कोई शख़्स अपने बिस्तर से उठ कर कहीं जाए और फिर लौट कर आए तो उसे अपनी चादर के पल्लू से तीन मर्तबा झाड़ ले, क्योंकि वो नहीं जानता कि उस के बिस्तर पर क्या (साँप, बिच्छू वग़ीरा) आ गया हो? और जब सोने के लिए लेट जाए तो कहे:

39. بِاسْمِكَ رَبِّي وَضَعْتُ جَنْبِي وَبِكَ أَرْفَعُهُ◉ فَإِنْ أَمْسَكْتَ نَفْسِي فَارْحَمْهَا◉ وَإِنْ أَرْسَلْتَهَا فَاحْفَظْهَا بِمَا تَحْفَظُ بِهِ عِبَادَكَ الصَّالِحِينَ

बिस्मिका रब्बि वज़अ्तु जम्बी व बिका अर्फउह, फ़इन अम्सक्ता नफ़्सी फ़र्हम्हा, व इन अर्सल्तहा फ़हफ़ज़्हा बिमा तहफ़ज़ु बिही अिबाद्कस-सालिहीन।
(सहीह अल-बुख़ारी व सहीह मुस्लिम)

40. हज़रत फ़ातिमा (रज़ियल्लाहु अन्हा) से फ़रमाया:

क्या मैं तुम्हें ऐसा अमल न बताऊँ जो तुम्हारे लिए ख़ादिम से भी बेहतर है? जब तुम अपने बिस्तर पर लेटो तो 33 मर्तबा ((سُبْحَانَ اللهِ)) **सुब्हान अल्लाह**, 33 मर्तबा ((اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ))**अल्हम्दुलिल्लाह** और 34 मर्तबा ((اَللّٰهُ اَكْبَرُ)) **अल्लाहु अकबर** कहा करो।" (मुत्तफ़क़ुन अलैह)

.41

اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِ مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ عَلَى إِبْرَاهِيمَ وَعَلَى آلِ إِبْرَاهِيمَ إِنَّكَ حَمِيدٌ مَجِيدٌ۞اللَّهُمَّ بَارِكْ عَلَى مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِ مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكْتَ عَلَى إِبْرَاهِيمَ وَعَلَى آلِ إِبْرَاهِيمَ إِنَّكَ حَمِيدٌ مَجِيدٌ ۞

अल्लाहुम्मा सल्लि अला मुहम्मदिंव-व अला आलि मुहम्मदिन कमा सल्लैता अला इब्राहीमा व अला आलि इब्राहीमा इन्नका हमीदुम-मजीद। अल्लाहुम्मा बारिक अला मुहम्मदिंव-व अला आलि मुहम्मदिन कमा बारकता अला इब्राहीमा व अला आलि इब्राहीमा इन्नका हमीदुम-मजीद।

أَللَّهُمَّ احْفَظْنَا مِنْ كُلِّ بَلَاءِ الدُّنْيَا وَ عَذَابِ الْآخِرَةِ . رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّا إِنَّكَ أَنْتَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ . وَصَلَّى اللّٰهُ عَلَى عَبْدِهِ وَرَسُوْلِهِ مُحَمَّدٍ وَآلِهِ وَصَحْبِهِ وَسَلَّمَ.

अल्लाहुम्मा-हफ़ज़ना मिन कुल्लि बलाइद्-दुनिया व अज़ाबिल-आख़िरह। रब्बना तक़ब्बल मिन्ना इन्नका अन्तस्-समीउल-अलीम। व सल्लल्लाहु अला अब्दिही व रसूलीही मुहम्मदिंव-व आलिही व सहिबही व सल्लम।

Is kitab ki taba'at o isha'at mein hamare saath hamare dost

Engineer Mohammad Naseem (hafizahullah) walad Mohammad Mursaleen (rahimahullah)
(Al-Khobar, Saudi Arab, Bahrain, Munshi Pura, Mau, India)
Ne apne marhoom waalidayn غَفَرَ اللَّهُ لَنَا وَلَهُمَا (Ghafarallāhu lanā wa lahumā) aur ahliya marhooma Abida Naseem (rahimahallah) bint marhoom Dr. Abdul Majid Lari (rahimahallah) ke Sadqa-e-Jariya ke liye ta'awun kiya hai.

غَفَرَ اللَّهُ لَنَا وَلَه وَلِوَالِدَيْنَا وَلِوَالِدَيْهِ وَزَوْجَتِهِ◉ وَجَزَاهُ اللَّهُ خَيْرًا فِي الدُّنْيَا وَالآخِرَةِ

Ghafar-Allāhu lanā wa-lahu wa-li-wālidaynā wa-li-wālidayhi wa-zawjatihi, wa-jazāhu-Allāhu khayran fi-dunyā wal-ākhirah.

Allah Ta'ala hamari, us ki, hamare walidain ki, us ke walidain ki aur us ki ahliya (biwi) ki maghfirat farmaye, aur usey duniya o aakhirat mein behtareen jaza ata farmaye

Abu Adnan Mohammed Munir Qamar Nawabuddin
Translator, Sharia Court Al-Khobar
And Cooperative Preacher at Makatib al-Jaliyat
(Dawah Centers) Al-Khobar, Ar-Rakah, and Ad-Dammam
Saudi Arabia